आरती संग्रह
दुर्गा दर्शन प्रकाशन मन्दिर
आरतियों का संग्रह (रंगीन चित्रों सहित)
मूल्य ९-०० रुपये
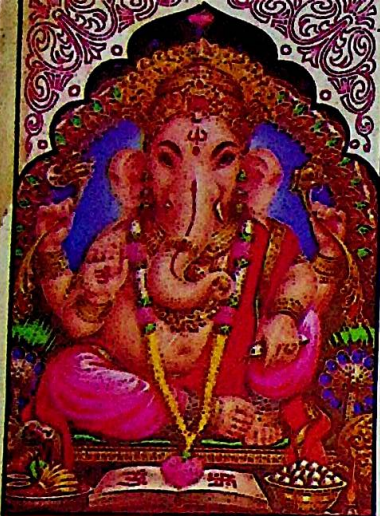
जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा।
माता जाकी पारवती, पिता महादेवा॥

एक दंत दयावंत, चार भुजा धारी।
मस्तक पर सिन्दूर सोहे, मूसे की सावारी॥ जय गणेश...

अंधन को आंख देत, कोढ़िन को काया।
बांझन को पुत्र देत, निर्धन को माया॥ जय गणेश...

हार चढ़े, फूल चढ़े और चढ़े मेवा।
लड्डुअन का भोग लगे, संत करें सेवा॥ जय गणेश...

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा।
माता जाकी पारवती, पिता महादेवा॥

### -: श्री गणेश-वन्दना :-

वर्णानामर्थसंघानाम् रसानाम् छन्दसामपि।
मंगलानाम् च कर्तारौ वन्दे वाणीविनायकौ॥

गजाननं भूतगणादिसेवितं कपित्थजम्बू फल चारु भक्षणम्।
उमासुतं शोकविनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वर पादपंकजम्॥



प्रकाशक एवं पुस्तक प्राप्ति स्थान: हरीदर्शन प्रकाशन मन्दिर, फ्लैट नं. 27-बी, न्यू कुतुब रोड, सदर बाजार, दिल्ली-110 006. दूरभाष-

ओ३म् जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्त जनों के संकट, छिन में दूर करे।।

जो ध्यावे फल पावे, दुख बिनसे मन का। स्वामी...
सुख-सम्पति घर आवे, कष्ट मिटे तन का।। ओ३म्...

मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी। स्वामी...
तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी।। ओ३म्...

तुम पूरन परमात्मा, तुम अन्तर्यामी। स्वामी...
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी।। ओ३म्...

तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता। स्वामी...
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता।। ओ३म्...

तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपती। स्वामी...
किस बिधि मिलूँ दयामय, तुमको मैं कुमती।। ओ३म्...

दीनबन्धु दुख हर्ता, तुम ठाकुर मेरे। स्वामी...
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे।। ओ३म्...

विषय-विकार मिटाओ, पाप हरो देवा। स्वामी...
श्रद्धा-भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा।। ओ३म्...

## -: श्रीविष्णु-स्तुति

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं, विश्वाधारं ग[illegible]दृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं, वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्।।

श्री मचद्र कृपा हरण भव भय दारुणम्।
नव ज-लोच कंज पद-कंजारुणम्।।

कंदर्प अ नील-नीरज-सुन्दरम्
पटपीत मानहु जनक सुता-वरम्।।

भजु दीनबंधु दिने द नव वंश - निकंद म्।
रघुनंद आनंदकंद कौशलचन्द दशरथ - नम्।।

सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु उदार अं
आजानुभुज शर-चाप-धर संग्राम-जित-ख

इति वदति तुलसीदास शंकर-शेष-मुनि-म
मम हृदय कंज निवास कुरु कामादि-खल-दल- नम्।।

आरती कीजै श्री रघुबरजी की।
सत चित आनन्द शिव सुन्दर की।।

दशरथ-तनय कौसिला-नन्दन, सुर-मुनि-रक्षक दैत्य-निकन्दन।
अनुगत-भक्त भक्त-उर-चन्दन, मर्यादा-पुरुषोत्तम वरकी।।

निर्गुन-सगुन अरूप-रूपनिधि, सकल लोक-वन्दित विभिन्न विधि।
हरण शोक-भय, दायक सब सिधि, मायारहित दिव्य नर-वरकी।।

जानकिपति सुराधिपति जगपति, अखिल लोक पालक त्रिलोक गति।
विश्ववंद्य अनवद्य अमित-मति, एकमात्र गति सचराचर की।।

शरणागत-वत्सल-व्रतधारी, भक्त-कल्पतरु-वर असुरारी।
नाम लेत जग पावनकारी, बानर-सखा, दीन-दुख हरकी।।
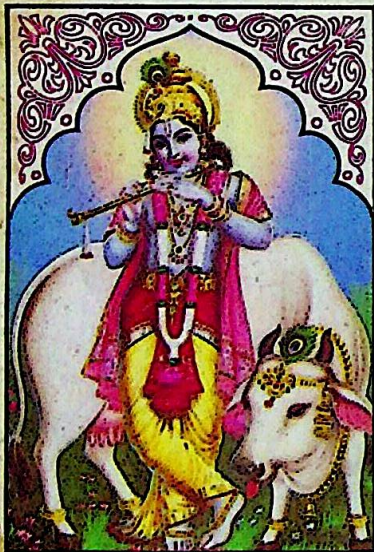
# आरती श्री कुञ्ज बिहारी

आरती कुंजबिहारी की। श्री गिरधर कृष्णमुरारी की

गले में बैजन्ती माला। बजावै मुरलि मधुर बाला।
श्रवन में कुण्डल झलकाला। नंद के आनन्द नन्दलाला।

गगन सम अंग कांति काली। राधिका चमक रही आली।
लतन में ठाढ़े बनमाली। भ्रमर सी अलक।
कस्तूरी तिलक चंद्र सी झलक। ललित छबि श्यामा प्यारी की।। श्री गिरधर...

कनकमय मोर मुकुट बिलसै। देवता दरसन को तरसैं।
गगनसों सुमन रासि बरसै। बजे मुरचंग।
मधुर मिरदंग ग्वालनी संग। अतुल रति गोप कुमारी की।। श्री गिरधर...

जहाँ ते प्रकट भई गंगा। कुलुष कलि हारिणि
स्मरन ते होत मोह भंगा। बसी सिव सीस
हरै अघ कीच। चरन छवि श्री नवार ।। श्री र...

चमकती उज्ज्वल तट रेन बेनू।
चहूँ दिसि गोपि ग्वाल ली चंद।
कटत भव री की।। श्री गिरधर...

अ ती कुंज बिहारी गिरधर कृष्णमुरारी की

# आरती श्री त्रिगुण देव

जय शिव ओं[illegible]ा, [illegible]
ब्रह्मा [illegible]सदा। [illegible]रा।।
ओ[illegible] ह[illegible]

एकानन चतुरानन पंचानन [illegible]
हंसानन गरुड़ासन वृषवाहन साजे।। ॐ हर हर...

दो भुज चारु चतुर्भुज दशभुज अति सोहे।
तीनों रूप निरखते, त्रिभुवन-जन मोहे।। ॐ हर हर...

अक्षमाला वनमाला रुण्डमाला धारी।
त्रिपुरारी कंसारी करमाला धारी।। ॐ हर हर...

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर अंगे।
सनकादिक गरुड़ादिक भूतादिक संगे।। ॐ हर हर...

कर मध्ये सुकमण्डलु चक्र शूल धारी।
सुखकारी दुखहारी जग-पालनकारी।। ॐ हर हर...

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर में शोभित ये तीनों एका।। ॐ हर हर...

त्रिगुणस्वामि की आरती जो कोई नर गावै।
कहत शिवानन्द स्वामी मनवांछित फल पावै।। ॐ हर हर...

# आरती श्री सत्यनारायणजी

जय लक्ष्मी रमणा, श्री लक्ष्मी रमणा।
सत्यनारायण स्वामी, जन-पातक-हरणा॥

रत्न जड़ित सिंहासन, अद्भुत छवि राजे।
नारद करत निराजन, घंटा ध्वनि बाजे॥ जय...

प्रकट भये कलि कारण, द्विज को दरस दियो।
बूढ़ो ब्राह्मण बनकर, कंचन-महल कियो॥ जय...

दुर्बल भील कठारो, जिनपर कृपा करी।
चन्द्रचूड़ एक राजा, ज़िनकी विपति हरी॥ जय...

वैश्य मनोरथ पायो, श्रद्धा तज दीन्हीं।
सो फल भोग्यो प्रभुजी, फिर अस्तुति कीन्हीं॥ जय...

भाव-भक्ति के कारण, छिन-छिन रूप धर्‌यो।
श्रद्धा धारण कीनी, तिनको काज सर्‌यो॥ जय...

ग्वाल-बाल सँग राजा, वन में भक्ति करी।
मनवांछित फल दीन्हों, दीनदयालु हरी॥ जय...

चढ़त प्रसाद [illegible]वायें, कदली [illegible]।
धूप दीप तु[illegible] [illegible] जय...

श्री सत्य[illegible] की [illegible]।
तन मन सुख-[illegible], [illegible] जय...

# आरती
# श्री हनुमान जी

आरती ... लना की।
दुष्ट दलन ... कला की॥

जाके बल से गिरिवर क... रोग दोष जाके निकट न झाँके॥ आरती...
अंजनी पुत्र महा बलद...। सन्तन के प्रभु सदा सहाई॥ आरती...
दे बीरा रघुनाथ पठाये। लंका जारि सिया सुधि लाये॥ आरती...
लंका सो कोट समुद्र सी खाई। जात पवनसुत बार न लाई॥ आरती...
लंका जारि असुर संहारे। सियारामजी के काज सँवारे॥ आरती...
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे। आनि सँजीवन प्रान उबारे॥ आरती...
पैठि पताल तोरि जम-कारे। अहिरावन की भुजा उखारे॥ आरती...
बायें भुजा असुरदल मारे। दहिने भुजा संतजन तारे॥ आरती...
सुर नर मुनि आरती उतारें। जय जय जय हनुमान उचारें॥ आरती...
कंञ्चन थार कपूर लौ छाई। आरति करत अंजनी माई॥ आरती...
जो हनुमान की आरती गावै। बसि बैकुण्ठ परम पद पावै॥ आरती...

## -: श्री हनुमत्-वन्दनः-

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि॥

# आरती
# श्री सरस्वती जी

जय सरस्वती माता, मैया जय सरस्वती माता।
सद्गुण वैभव शालिनि, त्रिभुवन विख्याता।।
चन्द्रवदनि पद्मासिनि, द्युति मंगलकारी।
सोहे शुभ हंस सवारी, अतुल तेजधारी।। मैया जय...
बाएं कर में वीणा, दाएं कर माला।
शीश मुकुट मणि सोहे, गल मोतियन माला।। मैया जय...
देवि शरण जो आए, उनका उद्धार किया।
पैठि मंथरा दासी, रावण संहार किया।। मैया जय...
विद्या ज्ञान प्रदायिनि ज्ञान प्रकाश भरो।
मोह, अज्ञान और तिमिर का, जग से नाश करो।। मैया जय...
धूप दीप फल मेवा, माँ स्वीकार करो।
ज्ञानचक्षु दे माता, जग निस्तार करो।। मैया जय...
माँ सरस्वती की आरती, जो कोई जन गावे।
हितकारी सुखकारी, ज्ञान भक्ति पावे।। मैया जय...

## -: श्री [illegible]रस[illegible]ती-वन्दन :-

या कुन्देन्दुतुष[illegible]वला या शुभ्रवस्त्रावृता।
या वीणाव[illegible] या श्वेतपद्मा[illegible]।।
या [illegible] [illegible]वैः सदा
सा माम पातु [illegible] निःशेष जाड्या[illegible]

# आरती श्री लक्ष्मी जी

ओ३म् जय लक्ष्मी मा[illegible]
तुमको निसिदिन सेवत, [illegible]
उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम ही [illegible]
सूर्य-चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गा[illegible]
दुर्गा रूप निरंजनि, सुख-स[illegible] दाता।
जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि-सिद्धि धन पाता।। ओ३म्...

तुम पाताल-निवासिनि, तुम ही शुभदाता।
कर्म-प्रभाव-प्रकाशिनि, भवनिधि की त्राता।। ओ३म्...

जिस घर में तुम रहती, सब सद्गुण आता।
सब सम्भव हो जाता, मन नहीं घबराता।। ओ३म्...

तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न हो पाता।
खान-पान का वैभव, सब तुमसे आता।। ओ३म्...

शुभ-गुण मंदिर सुन्दर, क्षीरोदधि-जाता।
रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता।। ओ३म्...

महालक्ष्मीजी की आरती, जो कोई जन गाता।
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता।। ओ३म्...

## -: श्री लक्ष्मी-वन्दना:-

महालक्ष्मि नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं सुरेश्वरि।
हरिप्रिये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं दयानिधे।।

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
तुमको निशिदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवरी।।

माँग सिंदूर विराजत टीको मृगमदको। उज्ज्वल से दोउ नैना, चन्द्र बदन नीको।।
कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजे। रक्त-पुष्प गल माला, कण्ठन पर साजे।।
केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी। सुर-नर मुनि-जन सेवत, तिनके दुख हारी।।
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती। कोटिक चन्द्र दिवाकर, राजत सम ज्योति।।
शम्भ-निशुम्भ विदारे, महिषासुर घाती। धूम्रविलोचन नैना, निशिदिन मदमाती।।
चण्ड-मुण्ड संहारे, शोणितबीज हरे। मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे।।
ब्रह्माणी रुद्राणी, तुम कमलारानी। आगम-निगम बखानी, तुम शिव पटरानी।।
चौंसठ योगिनि मंगल गावत, नृत्य करत भैरूँ। बाजत ताल मृदंगा, और बाजत डमरू।।
तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता। भक्तन की दुख हरता, सुख सम्पत्ति करता।।
भुजा चार अति शोभित, वर-मुद्रा धारी। मनवांछित फल पावत, सेवत नर-नारी।।
कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती। श्रीमालकेतु में राजत, कोटि रतन ज्योति।।
अम्बेजी की आरती, जो कोई नर गावे। कहत शिवानं[illegible] [illegible]ख-सम्पत्ति पावे।।

या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः, पापा
श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जां, तां त्व.
देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद [illegible]
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्व, त्वमीः [illegible] दाव
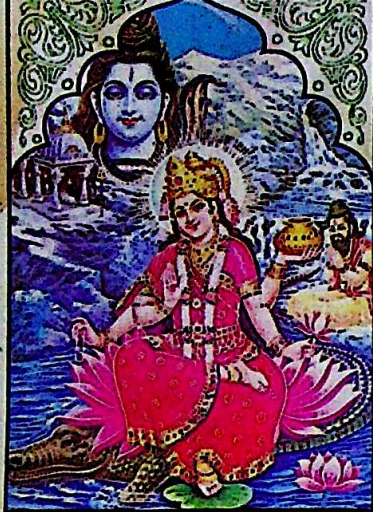
जो न...

चन्द्र सी ज्योति तुम्हारी, जल ...
शरण पड़े जो तेरी, सो नर ...

पुत्र सगर के तारे, सब जग ...
कृपा दृष्टि हो तुम्हारी, त्रिभुवन सुख ...।। ओ३म् जय...

एक बार जो प्राणी, शरण तेरी आता।
यम की त्रास मिटाकर, परमगति पाता।। ओ३म् जय...

आरती मातु तुम्हारी जो नर नित गाता।
सेवक वही सहज में, मुक्ति को पाता।। ओ३म् जय...

## -: श्री गंगा-वन्दन :-

पापापहारि दुरितारि तरंगधारि। शैलप्रचारि गिरिराज गुहाविदारि।
झंकारकारि हरिपाद रजोऽपहारि। गंगां पुनातु सततं शुभकारि वारि।।

## -: श्री सूर्य-वन्दना :-

नमो नमस्तेऽस्तु सदा विभावसो, सर्वात्मने सप्तहयाय भानवे।
अनन्तशक्तिर्मणि भूषणेन, वदस्व भक्तिं मम मुक्तिमव्ययाम्।।
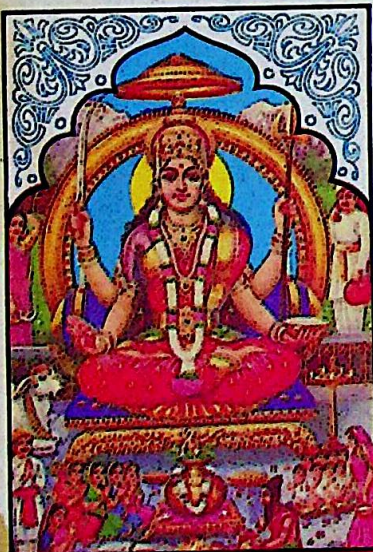
जय सन्तोषी माता, मैया जय सन्तोषी माता।
अपने सेवक जन की, सुख सम्पत्ति दाता।।

सुन्दर चीर सुनहरी, माँ धारण कीन्हों।
हीरा पन्ना दमके, तन श्रृंगार लीन्हों।। जय...
गेरु लाल छटा छवि, बदन कमल सोहे।
मन्द हंसत करुणामयी, त्रिभुवन मन मोहे।। जय...

स्वर्ण सिंहासन बैठी, चंवर ढुरें प्यारे।
धूप दीप मधुमेवा, भोग धरें न्यारे।। जय...
गुड़ अरु चना परमप्रिय, तामें संतोष कियो।
सन्तोषी कहलाई, भक्तन विभव दियो।। जय...

शुक्रवार प्रिय मानत, आज दिवस सोही।
भक्त मण्डली छाई, कथा सुनत मोही।। जय...
मन्दिर जगमग ज्योति, मंगल ध्वनि छाई।
विनय करें हम बालक, चरनन सिर नाई।। जय...

भक्ति भावमय पूजा, अंगीकृत कीजै।
जो मन बसै हमारे, इच्छा फल दीजै।। जय...
दुखी दरिद्री रोगी, संक [illegible] े।
बहु धन-धान्य भरे घर, सु [illegible] जय...

ध्यान धर्यो जिस जन ने, मनवां [illegible]
पूजा कथा श्रवणकर, घर [illegible]
शरण गहे [illegible]

सन्तोषी माँ द [illegible]
ऋद्धि सि [illegible]

जय भगवद्गीते जय भगवद्गीते।
हरि-हिय-कमल-विहारिणि सुन्दर सुपुनीते।।

कर्म-सुमर्मप्रकाशिनि, कामासक्तिहरा।
तत्त्वज्ञान-विकाशिनि, विद्या ब्रह्म परा।। जय...

निश्चिल भक्ति विधायिनि निर्मल मलहारी।
शरण-रहस्य प्रदायिनि सब बिधि सुखकारी।। जय...

राग-द्वेष-विदारिणी कारिणि मोद सदा।
भव-भय-हारिणि तारिणि परमानन्दप्रदा।। जय...

आसुरभाव-विनाशिनि, नाशिनि तम-रजनी।
दैवी सद्गुण दायिनि, हरि-रसिका सजनी।। जय...

समता, त्याग सिखावनि, हरि-मुख की बानी।
सकल शास्त्रकी स्वामिनि, श्रुतियोंकी रानी।। जय...

दया-सुधा बरसावनि मातु! कृपा कीजै।
हरि-पद-प्रेम दान कर, अपनो कर लीजै।। जय...

आरति श्री रामायनजी की।
कीरति कलित ललित सिय-पी की।।

गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद। बालमीक बिज्ञान बिशारद।।
शुक सनकादि शेष अरु शारद। बरनि पवनसुत कीरति नीकी।। आरती...

गावत वेद पुरान अष्टदस। छओ सास्त्र सब ग्रंथन को रस।।
मुनि जन धन सन्तन को सरबस। सार अंस सम्मत सबही की।। आरती...

गावत संतत शम्भु भवानी। अरु घटसंभव मुनि बिग्यानी।।
व्यास आदि कविबर्ज बखानी। कागभुसुंडि गरुड़ के ही की।। आरती...

कलिमल हरनि विषय रस फीकी। सुभग सिंगार मुक्ति जुबती की।।
दलन रोग भव मूरि अमी की। तात मात सब बिधि तुलसी की।। आरती...

## -: भगवान् श्रीराम-स्तुति :-

नीलाम्बुज श्यामलकोमलाँग सीता समारे पितवाम भागम्।
पाणौ महासायक चारुचापं नमामि रामं रघवशं नाथम्।।

## -: श्री जनकी-वन्दन :-

उद्भवस्थितिसंहारकारेणीं क्लेशहारिणीम्।
सर्वश्रेयस्करीं सीतां नतोऽहं रामवल्लभाम्।।